विस्तृत रूपरेखा

I. सीनै के जंगल में (1:1-10:36)

A. इस्राएल के बारह गोत्रों की गिनती (1:1-46)

B. लेवियों को गिनती से बाहर रखा जाना (1:47-54)

C. डेरे की व्यवस्था (2:1-34)

D. लेवियों की भूमिका और संख्या (3:1-4:49)

1. याजकपद की उत्पत्ति (3:1-4)
2. लेवियों एवं याजकों की भूमिका; एक महीने से अधिक आयु के लेवियों की गिनती (3:5-39)
3. लेवियों का पहलौठे का स्थान लेना (3:40-51)
4. तीस से पचास वर्ष के लेवियों की गिनती और उनकी जिम्मेदारियाँ (4:1-49)

E. अशुद्धता और शुद्धिकरण (5:1-6:21)

1. अशुद्ध व्यक्ति के साथ बर्ताव (5:1-10)
2. व्यभिचार की संदेह पत्नी का परीक्षण (5:11-31)
3. नाज़ीर होने के नियम (6:1-21)

F. याजकीय आशीर्वाद (6:22-27)

G. निवास स्थान संबंधी नियम (7:1-8:26)

1. निवास स्थान खड़ा करते समय अगुओं की भेंट (7:1-89)
2. निवास स्थान में दीपक स्थापित करना (8:1-4)
3. लेवियों को उनके कार्य के लिए शुद्ध करना (8:5-26)

H. फसह नाम पर्व मनाना (9:1-14)

I. कनान की यात्रा के लिए प्रस्थान करना (9:15-10:10)

1. निवास स्थान पर बादल (9:15-23)
2. चांदी की दो तुरहियां (10:1-10)

J. इस्राएलियों को प्रस्थान का आदेश (10:11-28)

K. मूसा का होबाब को उनके संग चलने का निमंत्रण (10:29-32)

L. सीनै पर्वत से प्रस्थान (10:33-36)

II. पारान की जंगल की ओर प्रस्थान (11:1-12:16)

A. पाप और इसका परिणाम (11:1-12:15)

1. लोगों का कुड़कुड़ाना और परमेश्वर का आग द्वारा प्रत्युत्तर (11:1-3)

2. मांस के लिए कुड़कुड़ाना और परमेश्वर का बटेरों का प्रबंध (11:4-34)
3. हसेरोत आगमन् (11:35)
4. हारून और मरियम का पाप, मरियम का कोढ़िन होना (12:1-15)

B. पारान के जंगल में आगमन् (12:16)

III. पारान का जंगल (13:1-20:29)

A. भेदियों का कनान मिशन और उनका रिपोर्ट (13:1-33)

B. इस्राएलियों का विद्रोह और उसका परिणाम (14:1-45)
1. लोगों का भय के प्रति प्रत्युत्तर (14:1-4)
2. मूसा, हारून, यहोशू, और कालीब का विद्रोह के प्रति प्रत्युत्तर (14:5-10)
3. परमेश्वर का मूसा पर प्रकट होना (14:10b-35)
   a. परमेश्वर का इस्राएलियों को नष्ट करने की धमकी (14:10-12)
   b. इस्राएलियों के लिए मूसा का परमेश्वर से निवेदन (14:13-19)
   c. परमेश्वर का यह शपथ कि वे लोग प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश न कर सकेंगे (14:20-35)
4. भेदियों की मृत्यु (14:36-38)
5. मूसा ने परमेश्वर की न्याय का घोषणा किया (14:39)
6. परमेश्वर बिना लोगों का कनान प्रवेश का प्रयास और उनकी पराजय (14:40-45)

C. बलिदान से संबंधित नियम (15:1-21)
1. यहोवा के लिए होमबलि (15:1-16)
2. गूंधे हुए आटे का बलिदान (15:17-21)

D. बलिदान से संबंधित व्यवस्था का उल्लंघन (15:22-36)
1. अनजाने में पाप (15:22-29)
2. जानबूझ कर पाप करना (15:30-36)
   a. जानबूझ कर किए गए पाप के प्रति नियम (15:30, 31)
   b. नियम का अनुप्रयोगः सब्त उल्लंघन करने वाले का पत्थरवाह किया जाना (15:32-36)

E. बलिदान से संबंधित आज्ञा मानने के लिए संस्मरणः वस्त्रों के छोर पर झालर (15:37-41)

F. मूसा और हारून के विरूद्ध विद्रोह (16:1-17:13)
1. कोरह, दातान, अबीराम; और ओन का विद्रोह (16:1-3)
2. कोरह को मूसा की चुनौती (16:4-11)

3. दातान और अबीराम ने मूसा की बात मानने से इनकार किया (16:12-15)
4. परमेश्वर ने विद्रोहियों को दण्डित किया (16:16-40)
   a. विद्रोहियों को भूमि ने निगल लिया (16:16-34)
   b. धूप चढ़ाने वाले आग से भस्म हुए और धूपदान स्मरणार्थ बच गया (16:35-40)
5. मरी के द्वारा विद्रोहियों को दण्डित करना (16:41-50)
6. हारून की कलियों वाली छड़ी, परमेश्वर की स्वीकृति का चिह्न (17:1-13)

G. याजकों और लेवियों से संबंधित विधियां (18:1-19:22)
1. याजकों और लेवियों की भूमिका एवं जिम्मेदारियां (18:1-32)
2. शुद्धिकरण के लिए प्रयोग किया जाने वाला लाल निर्दोष बछिया (19:1-22)

H. कादेश और होर पर्वत पर (20:1-22)
1. मरियम की मृत्यु (20:1)
2. पानी की कमी के लिए कुड़कुड़ाना; और तब चट्टान से पानी उपलब्ध कराना (20:2-11)
3. मूसा और हारून को उनके पाप के कारण प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश नहीं करने दिया गया (20:12, 13)
4. एदोम ने विनती स्वीकार नहीं किया (20:14-21)
5. कादेश से होर पर्वत (20:22)

I. हारून की मृत्यु और एलिआज़ार की नियुक्ति (20:23-29)

IV. मोआब के मैदान की ओर यात्रा (21:1-35)

A. अराद की राजा पर विजय और उसके नगरों का विनाश (21:1-3)
B. इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना, सांपों से दण्ड, और पीतल का सांप (21:4-9)
C. मोआब के मैदान की ओर मार्ग में पड़ने वाले स्थान (21:10-20)
D. एमोरियों के राजा सिहोन पर विजय (21:21-32)
E. बासान के राजा ओग पर विजय (21:33-35)

V. मोआब का मैदान (22:1-36:13)

A. मोआब के मैदान में इस्राएलियों का डेरा (22:1)
B. बालाक और बिलाम का वृतांत (22:2-24:25)
1. मोआब के राजा बालाक द्वारा बिलाम को बुलावा भेजना (22:2-7)
2. परमेश्वर के निर्देशानुसार बिलाम का जाने से इनकार (22:8-13)
3. बालाक द्वारा दूसरा बुलावा भेजना (22:14-18)

4. बिलाम को जाने के लिए परमेश्वर का निर्देश (22:19-21)
5. बिलाम को उसके गधे ने परमेश्वर के क्रोध से बचाया (22:22-33)
6. बिलाम को जाने के लिए परमेश्वर का निर्देश लेकिन केवल उसको परमेश्वर का ही संदेश कहना था (22:34, 35)
7. मोआब के सीमा पर बिलाम का पहुँचना और बालाक के साथ उसकी भेंट (22:36-41)
8. बिलाम की भविष्यवाणियां (23:1-24:24)
    a. पहली भविष्यवाणीः "परमेश्वर ने इस्राएल को आशीषित किया है" (23:1-12)
    b. दूसरी भविष्यवाणीः "परमेश्वर इस्राएल के साथ है" (23:13-26)
    c. तीसरी भविष्यवाणीः "इस्राएल एक महान राष्ट्र है" (23:27-24:14)
    d. चौथी भविष्यवाणी (24:15-24): "याकूब में से एक तारा उदय होगा और मोआब और एदोम को नष्ट करेगा" (24:15-19)
    e. अन्य राष्ट्रों के विरूद्ध भविष्यवाणियां (24:20-24)
9. बिलाम और बालाक का अपने-अपने स्थानों में लौटना (24:25)

C. मोआब के मैदानों में इस्राएलियों के पाप का वृतांत (25:1-18)
1. मोआब की पुत्रियों के साथ इस्राएलियों का कुकर्म और बालपोर देवता की पूजा (25:1-3)
2. बालपोर देवता से मिले लोगों का घात किया जाना (25:4, 5)
3. मरी रोकने के लिए पीनहास ने दो लोगों को मारा (25:6-9)
4. पीनहास को "सदाकाल के लिए याजकीय" पद (25:10-15)
5. परमेश्वर का मिद्यानियों के विरूद्ध उग्र होने की आज्ञा (25:16-18)

D. दूसरी गिनती (26:1-65)
1. बारह गोत्रों की गिनती (26:1-51)
2. पहला उद्देश्यः देश का बंटवारा (26:52-56)
3. लेवियों की गिनती (26:57-62)
4. प्रथम गिनती से (दो को छोड़कर) कोई जीवित नहीं रहा (26:63-65)

E. देश विजय से संबंधित विधियां (27-30)
1. सलोफाद की पुत्रियां और उत्तराधिकार का नियम (27:1-11)
2. मूसा को बताया गया कि वह प्रतिज्ञा का देश तो देख सकता है किंतु उसमें प्रवेश नहीं कर सकता है, और यहोशू का मूसा का उत्तराधिकारी चुना जाना (27:12-23)

   3. भेंट से संबंधित विधियां (28:1-29:40)
   4. विशेषकर स्त्रियों से संबंधित मन्नत के संबंध में विधियां (30:1-16)
F. मिद्यानियों का विनाश (31:1-54)
   1. मिद्यान पर विजय, इसके लोगों का विनाश (31:1-24)
   2. लूट की बांट (31:25-54)
G. यरदन के पूर्व की ओर गोत्रों का बसना (32:1-42)
   1. रूबेन वंशी और गाद वंशी का निवेदन (32:1-5)
   2. मूसा का इनकार और चेतावनी (32:6-15)
   3. गोत्रों का स्वीकार्य समझौता (32:16-32)
   4. भूमि का बंटवारा (32:33-42)
H. इस्राएलियों का यात्रा मार्ग (33:1-49)
I. प्रतिज्ञा की देश के बारे में परमेश्वर की आज्ञा (33:50-35:34)
   1. कनान के निवासियों को बाहर निकालना (33:50-56)
   2. गोत्रों में भूमि बराबर बांटी जाए (34:1-29)
   3. विशिष्ट नगर (35:1-34)
      a. लेवियों के लिए नगर (35:1-8)
      b. शरणनगर और उनसे संबंधित विधियां (35:9-34)
J. उत्तराधिकारिणी द्वारा भूमि के उत्तराधिकारी से संबंधित विधियां (36:1-13)